प्रश्न. — हिन्दी भाषा की उद्भव एवं विकास का विवेचना कीजिए।
अथवा, काल निर्धारण करते हुए उसके विभिन्न विकसित रूप को प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर :— भाषा के अर्थ में हिन्दी शब्द के प्रयोग का ज्ञान द्वारा ही फारस और अरब से प्रारम्भ होता है। विद्वानों की यह मान्यता है कि छठी शदी ई० के कुछ पूर्व से ही ईरान में इज्बान ए हिन्दी) का प्रयोग भारत की भाषाओं के लिए होता रहा।

भारतवर्ष में भी भाषा के अर्थ में हिन्दी शब्द के प्रयोग का प्रारम्भ मुसलमानों द्वारा ही किया गया। भारतीय परम्परा में प्रचलित भाषा के लिए प्राचीन काल से ही भाषा शब्द का प्रयोग होता आया है, इसका प्रयोग क्रम से संस्कृत, प्राकृत तथा बाद में हिन्दी आदि के लिए हुआ' संस्कृत है (कुपजल) भाषा वहत कबीर (भाषा भनति मोर मति थोरी) तुलसीदास संस्कृत आदि ग्रंथों कि हिन्दी टिकाओं में भाषा टीका रूप में भी यह शब्द उसी अर्थ प्रयुक्त हुआ है। प्रायः देखा जाता है कि (हिन्दी) और (हिन्दवी) शब्द एक ही अर्थ रखते थे न अर्थ में प्रयुक्त होते थे यह उपयुक्त नहीं जान पड़ती एक ही भाषा के लिए बिना किसी विशेष कारण दो नामों साथ २ उत्पन्न होगा और बिल्कुल ही एक अर्थ में चलना कुछ उपयुक्त नहीं लगता। आरम्भ में ये शब्द किकर्तव्य ये ज्ञातव्य है कि खुसरो ने हिन्दी शब्द का प्रयोग भारतीय मुसलमानों के लिए किया है, और हिन्दी हिन्दवी शब्द का प्रयोग मध्य देशीय भाषा के लिए किन्तु ऐसा लगता है कि यह भेद अधिक दिनों तक नहीं चला, अरबी, फारसी तुर्की, के बहुत से प्रचलित भारतीय शब्द मुसलमानों की भाषा में ग्रहित हो गये और (हिन्दी) हिन्दवी शब्द प्रायः समनार्थि हो गये किन्तु पूर्णतः नहीं।

हिन्दी शब्द में अविछिन्न प्रयोग की 'परम्परा (दक्षिणी) हिन्दी के कवियों एवम् गद्यकारों में भी मिलती है। हिन्दी शब्द के आधुनिक अर्थ में प्रयुक्त होने का इतिहास भी बहुत ही विचित्र जान पड़ता है। प्रायः हिन्दी का प्रयोग उस भाषा के लिए मिलता है जो अरबी फारसी से भरती जा रही थी या वह भाषा जो बाद में विकसित होकर उर्दू कहलाई।

जनता में नवीं शदी के मध्यतक कुछ अपवादों को छोड़कर हिन्दी प्राय: इसी अर्थ में प्रयोग मिलता है। आधुनिक अर्थ में हिन्दी शब्द के व्यापक शब्द का श्रेय मुख्यत: अंग्रेजी का ही ही है। ~~18सों~~ 1800 ई० में ~~हो~~ विलियम कॉलेज की स्थापना कलकत्ते में हुई वहाँ गिल क्राइस्ट (हिन्दी या) हिन्दुस्तानी के अध्यापक नियुक्त हुए यदि गिलक्राइस्ट मध्य प्रदेश में वास्तविक प्रतिनिधि भाषाओं को जो न कि अरबी, फारसी भाषा की ओर झुकि हुई और न संस्कृत की ओर और अपनाया होता तो आज हिन्दी उर्दू का मानचित्र कुछ और ही होता, इस प्रकार अंग्रेजी चाहे जिस दृष्टि से किया है। 19वीं शदी के प्रथम 22 वर्षों में एक (हिन्दवी) या हिन्दी देवनागरी, संस्कृत हिन्दी शब्दों को स्पष्ट किया तो दूसरी ओर हिन्दुस्तान का रेखा या उर्दू फारसी लिपि अरबी, फारसी शब्द मुसलमानों को स्वत: शासन के इशारे पर 1842 में हिन्दी उर्दू का एक शिक्षा के संयोजन के समक्ष आया और इस प्रकार हिन्दी आज-कल के अर्थ में विशिष्ट रूप में हो गयी हिन्दी भाषा को लेकर उस समय विभिन्नताएं थी। इसके सिर मिलाएँ हिन्दी और भारतेन्दु उपाधि की अंत कथाओं में मूर्तिमान हो गयी।

हिन्दी भाषा का जन्म हजारों ई० के आस-पास माना जाता है। इसके इतिहास को भाषा की विकास की दृष्टि से तीन कालों में विभक्त किया जा सकता है। (1) आदिकाल 1000ई० से 1500 सौं ई० तक
(2) मध्यकाल 1500सौं ई० से 1800ई० तक और
(3) आधुनिक काल 1800 सौं से आज तक,

आदिकाल — यह हिन्दी का शैशव काल है, हिन्दी शब्द का ~~प्रयोग~~ प्रयोग सबसे पहले अरब और फारस में हिन्दुस्तानियों के लिए होता था आगे चलकर उनकी भाषा (जाव जर्फनर हिन्दी) कहा गया ~~लगभग~~ लगभग 24वी शताब्दी में पंचतंत्र के अनुसार करने के क्रम में उसको भूमिका में

संस्कृत के लिए (जवानह हिन्दी) कहा गया का प्रयोग मिला। इस प्रकार हिन्दी का प्रयोग संस्कृत के लिए ही प्रचलित रहा है। आदिकाल के हिन्दी में अपभ्रंश के बहुत रूप मिलते हैं। साथ ही साथ हिन्दी की विभिन्न उपभाषाओं एवं बोलियों के रूप इस काल में बहुत स्पष्ट तथा सुविकसित नहीं हैं। इस काल के साहित्य में कई बोलियों का मिश्रण मिलता है। अपभ्रंश से हिन्दी में लगभग सभी ध्वनियाँ लिन हैं। किन्तु उसके कुछ वहीं ध्वनियाँ का भी इस काल में विकास हुआ, अपभ्रंश के संयुक्त स्वर नहीं थे। हिन्दी में 'ऐ' और 'औ' संयुक्त स्वर इस काल में प्रयुक्त होने लगे। डा० धीरेन्द्र वर्मा ने अपने हिन्दी साहित्य के इतिहास में व्यंजनों में — ड, ढ, ढ़, ह, म्ह,) को नवीन ध्वनियाँ माना है लेकिन मालूम पड़ता है ये ध्वनियाँ पहले से चलती आ रही थी। शब्द समूह की दृष्टि से आदिकालिन हिन्दी अपभ्रंश से बहुत भिन्न नहीं थी इसमें तद्भव शब्द सर्वाधिक थे, तत्सम शब्द उससे कम तथा देशज उससे भी कम मात्रा में पाये जाते थे। अपभ्रंश तथा आदिकालिन हिन्दी के शब्द भंडार में विदेशी शब्दों की दृष्टि से अवश्य अन्तर मिलता है। अपभ्रंश में अरबी फारसी एवम् तुर्की शब्द की संख्या सबसे अधिक नहीं होगी किन्तु हिन्दी के इस काल के मुसलमानों के बस जाने एवम् शासन के कारण इन तीनों भाषाओं के प्रायः शब्द और कुछ प्रान्तों से भी आए विदेशी शब्द प्रायः उच्च वर्ग में आते हैं फिर मध्यम वर्ग और तब निम्नवर्ग में।

अतः अपने प्रारम्भिक काल में हिन्दी का रूप कई प्रदेशिक बोलियों में विभक्त मिलता है। यदि कहा जाय कि हिन्दी के क्षेत्र में अनेक भाषायें प्रचलित थी तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी।

~~राजस्थानी~~	~~खड़ीबोली~~	~~अवधी~~	~~छत्तीस.~~	~~बिहारी~~		
राजस्थानी	ब्रज	खड़ीबोली	अवधी	छत्तीस	बिहारी	पहाड़ी
मारवाड़ी		बाँगरू		गढ़ी	भोजपुरी	
मेवाड़ी		(हरियाणवी)			मगही	
मालवी					मैथिली	
जयपुरी						

१५।

इसलिए तत्कालिन हिन्दी का रूप इन प्रादेशिक हिन्दी भाषाओं के रूप कहे जा सकते है अर्थात् अपने शैशव काल मे हिन्दी मिश्र बोलियों के रूप में प्रसिद्ध थी।
आदिकाल के साहित्य में मुख्यतः डिंगल मैथिली दक्खिनी तथा मिश्रित रूपों का प्रयोग मिलता है, इस काल के प्रमुख हिन्दी का ~~साहित्य का~~ और गोरखनाथ, विद्यापति, चन्दबरदाई, कबीर, आदि है। प्राचीन खड़ी बोली के प्रेमचंद, खुसरो तथा कबीर माने जाते है।
(क) भला हुआ जो जुयारिया, पहनो महराकन्द, प्रेमचन्द।
(ख) एक नार ने अचरज किया, सांप मार पिंजरे में दिया (अमीर खुसरो)
(ग) अग्नि जो लागी नीर में कन्दा जलिया नार (कबीर)
इस प्रकार ~~विस्तृत~~ विविध बोलियों के रूप गोरखनाथ एवम् नाथपंथी सिद्धों में मिलते हैं, विद्यापति के देशी भाषा में मैथिली के प्राचीन रूप दिख पड़ते है इसी प्रकार प्राचीन हिन्दी के कुछ नमूने सिद्धों के रचनाओं में दिखाई पड़ती है। (जैसे बोली गई पाड़ी गई) जिस प्रकार लवण पानी में घुल जाता है [लीक धाई धर चित] ~~उसी प्रकार धरनी को हृदय में धारण करो।~~
हिन्दी का प्रथम कवि कौन है। इस सम्बन्ध में विवाद है। जहाँ तक मुसलमानों का सम्बन्ध है वहीं हिन्दी के प्रथम कवि ख्वाजा मसऊद, साद मुसलमान है। उनके हिन्दी भी संग्रह की चर्चा खुसरो ने की है। उनकी भाषा कदाचित प्राचीन पंजाबी मिश्रित थी।

<u>मध्यकाल</u> — इस काल तक आते-२ हिन्दी का स्वरूप स्पष्ट निखर आया उसकी प्रमुख बोलियाँ विकसित हो गई। ~~अपभ्रंश के विकसित हो गई~~, अपभ्रंश के रूप प्रायः समाप्त हो गये और हिन्दी के अपने रूप प्रयुक्त होने लगे। ध्वनियों के रूप में इस काल का यह विशेषता यह लिये लोगों कि हिन्दी में — क, ख, ग, घ, और पांचों ध्वनियाँ सम्मलित हो गई ...

स्वर और व्यञ्जन ध्वनियों के रूप वैसे ही रहे। किन्तु
इस युग के हिन्दी के संख्यावाचक शब्दों का विकास
अपने मौलिक रूप में प्रयुक्त होने लगा। → >> द्वादस >>>
बारह या द्वादस >>> दुवार >>> तेरहवां चौदहवां प्रत्यय
लगाकर सरल से विकसित होनेवाले सैकड़ों - सैकड़ों हजार,
वहीं मधुप, लोभ, लाख्यो आदि कुछ शब्दों के अनु
करण तुकबंदी के आधार पर विकसित हो गये।
जैसे राजा >>> राग >>> राई >>> ही राई।
इस युग में प्रायः दो हिन्दी दरबारी एवं मध्यकालीन
कवियों हिन्दी दृष्टिगत होती है, मध्यकालीन कवियों
की हिन्दी में स्पष्ट स्थानीय बोलियों व स्वयं संस्कृत
के प्रचलित उपमानों द्वारा और प्रतीकों का प्रयोग होता था
किन्तु दरबारी भाषा फारसी थी अतः उच्चवर्ग के लोग
फारसी पढ़ने लगे। और अपनी भाषा को प्रयुक्त शब्दों
का प्रायः शुद्ध फारसी जैसे उच्चारण करने लगे।
इस शुद्ध उच्चारण के कारण ही हो व्यंजन बोलियों
हिन्दी में आये शब्दों की ~~ध्व~~ दृष्टि से कई उल्लेखनीय
बातें घटित हुई। उस काल में लोक-धर्म की प्रगति के
प्रति अधिक ~~स्थान~~ स्थानियों बोलियों एवं संस्कृत के प्रचलित
उपमानों द्वारा अप्रतिष्ठा का प्रयोग होता था किन्तु ~~द~~ दर
बारी भाषा फारसी थी। अतः उच्च वर्ग के लोग फारसी
पढ़ने लगे और अपने भाषा ~~में प्रयुक्त शब्दों का प्रायः शुद्ध~~
~~आवश्यक करने लगे। इस शुद्ध उच्चारण के कारण।~~
को प्रयुक्त शब्दों का प्रायः शुद्ध फारसी जैसे उच्चारण
करने लगे इन शुद्ध उच्चारण के कारण ही हो। व्यंजन
बोलियों हिन्दी में आये शब्दों की दृष्टि से कई उल्लेखनीय
बातें घटित हुई। इस काल में लोक-धर्म की प्रगति
के प्रति अधिक स्थापना हो गये। इसी कारण प्रमुख हिन्दी
साहित्य कम-से-कम इस युग के प्रचलित धर्म पर लिखा
गया। धर्म के कारण संस्कृत के धार्मिक ग्रन्थों का
प्रचार बढ़ा। परिणाम यह हुआ कि आदिकाल की
तुलना तद्भव और देशज शब्दों का प्रयोग कम हुआ
इस काल का स्थान प्रायः शब्दों ने ~~लिया~~ ले लिया।

अरबी फारसी और तुर्की शब्दों में इस काल में अधिक आ गये। हिन्दी में इन शब्द की संख्या तीन हजार पाँच सौ ~~...~~ (3000, 500) है ~~...~~ फारसी 2000 हजार 500 सौ अरबी तथा 100 से कुछ कम तुर्की शब्द का प्रयोग बहुत कम हो रहे है। यह निश्चित इसी समय अपनी भाषा में आ चुके थे, और धीरे-धीरे उच्च से मध्यम और मध्यम से निम्न वर्ग में प्रवेश करते रहे थे। इस काल के इत्यादि उस लोक से हमारा प्रत्यक्ष सम्बन्ध हो गया। अतः 100 से कुछ कम पुर्तगाली तुर्की फारसी एवं कुछ 100 शब्द अंग्रेजी के भी हिन्दी में प्रचार हो गया। धर्म के प्रधानता के कारण ~~व~~ राजस्थान की भाषा अवधी तथा कच्छ स्थान की भाषा ब्रज में ही विशेष साहित्य लिखा गया। राजस्थानी कवियों में डिंगल और पिंगल की प्रयोग ग्रन्थ है। इनके अतिरिक्त दक्खिनी उर्दू, डिंगल मैथिली और खड़ी बोली में भी साहित्य की रचना हुई। इस काल का ~~प्रमुख साहित्यकार~~ प्रमुख साहित्यकार मलिक मुहम्मद जायसी, सूर, मीरा, तुलसी, केशव, बिहारी, भूषण आदि है।

आधुनिक काल —— इस काल में आकर हिन्दी इसकी भाषा पूर्ण विकसित हो गई। विशेषकर इसाई व मिशनरी कवियों के पेशो द्वारा तथा इस युग की पत्र-पत्रिकाओं द्वारा हिन्दी का पूर्ण विकास हुआ। अत्यन्त विकसित ब्रज भाषा अवधि, राजस्थानी, मैथिली के रूप ओझल होती गयी, और अब खड़ी बोली हिन्दी एक प्रकार से छाती चली गई। हिन्दी की प्रमुख बोलियाँ इतनी विकसित हो गई हैं कि वह बोली न रहकर उपभाषाएं हो गई हैं। इस काल में अंग्रेजी से ~~प्रचलित व~~ प्रचलित शब्द आ गये हैं। सामान्य भाषा में भी इनकी संख्या 3000 की आस पास है। शिक्षा प्रचार-प्रसार के कारण इधर संस्कृत शब्द बहुत आये हैं। और बहुत से पुराने तद्भव और देशज शब्द अप्रचलित हो गये हैं। नये प्रकाशिक

Scanned with CamScanner

शब्दों के निर्माण का कार्य भी चल रहा है और बात-चीत की भाषा हिन्दी और विज्ञान आदि हर क्षेत्रों के लिए सक्षम भाषा बनती जा रही है। साहित्य के क्षेत्र में मुख्यतः खड़ी बोली का प्रयोग हो रहा है। राजनीति प्रधान युग होने के कारण हिन्दी की भाषा को प्रमुखता मिलना स्वाभाविक ही है। प्रतिष्ठित हिन्दी में एक नई ध्वनि 'ऑ' आ गई। इसका प्रयोग ऑफिस, कॉलेज आदि अंग्रेजी शब्दों में हो रहा है। ध्वनियों की दृष्टि से कुछ ~~विकास~~ विकास भी दृष्टिगत हो रहा है। आदि काल में हिन्दी ने दो संयुक्त स्वर (ऐ और औ) को अपनाया था। अब ये ध्वनियां धीरे-धीरे संयुक्त स्वर के स्थान पर मूल स्वर होती जा रही है। ऐसे लगता है कि आगे चलकर ऐ और औ में केवल समृद्धता विस्तृत और विपुलता का भेद रह जाएगा। मूल संयुक्त का नहीं। हिन्दी में रूपों का ~~प्रवृत्ति~~ प्राचुर्य मुख्यतः राजा शिवप्रसाद सिंह और राजा लक्ष्मण सिंह के भाषा में स्पष्ट लक्षित होता है। राजा लक्ष्मण सिंह को हिन्दी में तत्सम हिन्दी शब्दों की तथा प्रयोगों में कोई भ्रम की अधिकता मिलती है। जैसे नई पाठशाला के लिए नया पाठशाला का प्रयोग और 'उस और' का प्रयोग लक्षित होता है। राजा शिवप्रसाद की भाषा में फारसी शब्दों की अधिकता है। भारतेन्दु जी की भाषा में उद्धरण की प्रवृत्ति विशेष विकसित हुई। और भाषा विशेष परिष्कार हुआ।

महावीर प्रसाद द्विवेदी के युगों में काव्यों की लेखन प्रक्रिया में तत्सम शब्दों का प्रयोग मिलता

लोक भाषा में गवों का समावेश होने लगा। हिन्दी और प्रतीकों को वहीं शब्दावली लोक भाषा से बहुत प्रभावित हुई और स्वतंत्रता की प्राप्ति के पाश्चात्य उपन्यास, आंचलिक उपन्यास, सामान्य उपन्यास तथा नयी कविता नव गीत और प्रांतीय प्रबुद्धों में भाषा का प्रायोग लक्षित होता है।

Scanned with CamScanner